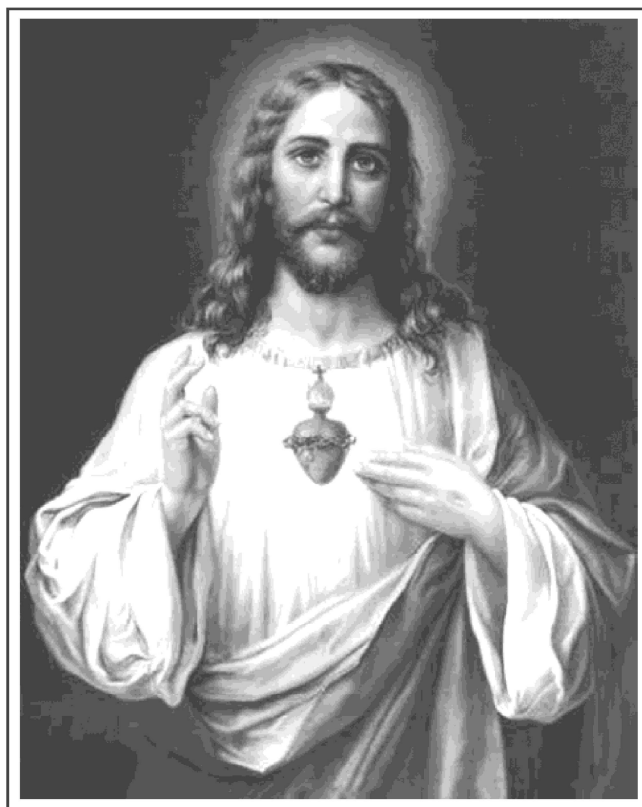




पाठ – सात ईसा मसीह

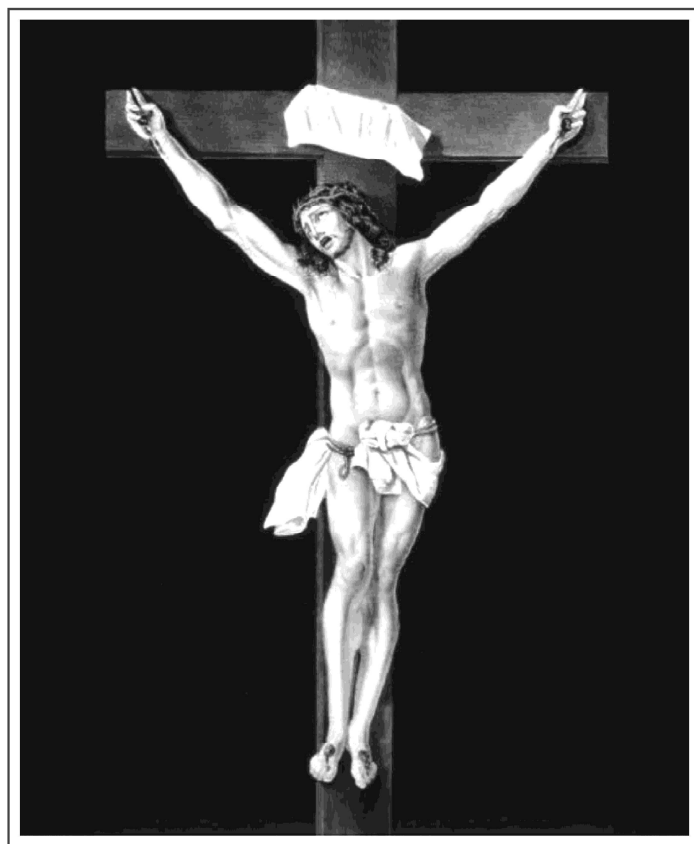


बेथलेहम में हेरोड महान की मृत्यु के चार वर्ष पहले एक यहूदी परिवार में एक दैविक लड़का एक अस्तबल में पैदा हुआ था। ईसाई धर्म के अनुसार उन्हें होली ट्रिनिटी(पवित्र त्रयक) के द्वितीय पुरुष बताया जाता है। उनके जन्म के बारे में ज्यादा जानकारी प्राप्त नहीं है। मेथिउ और ल्युक में केवल यह उल्लेख किया जाता है कि

जेरुजलम में एक दंपति के घर एक लड़का पैदा हुआ। उस लड़के ने करीब तीस वर्ष की अवस्था से धर्म प्रचार करना शुरू किया। उस लड़के के जन्म से संबंधित जानकारी इस प्रकार है कि आज से 2000 वर्ष पहले भगवान ने एसराएल में रहनेवाली मेरी नामक एक कुमारी के पास एक फरिश्ता भेजा। उस फरिश्ते ने मेरी से अपनी कोख में एक कुमारी की कोख में एक बच्चा धारण कर जन्म देने का आदेश दिया। मेरी की सगाई जोसफ नाम के एक बड़ई के साथ हुई थी। जब जोसफ को पता चला कि मेरी ने कुमारी अवस्था में गर्भधारण कर लिया है तब उस फरिश्ते ने जोसफ से मेरी को शादी कर अपनी पत्नी बनाने का आदेश दिया। जोसफ ने वह आदेश मान कर मेरी को बेथलेहम में नामकरण के लिए ले आए। वहाँ पहुँचकर मेरी ने एक दैव लड़के को जन्म दिया जिसका नाम था ‘यीशु’ अर्थात् ‘जिसस’। विद्वानों ने राजा हेरोड महान को बताया – “ यीशु सम्पूर्ण एसरायल में ही नहीं, वरण सारे संसार में राज करेंगे। ”

राजा हेरोड बहुत क्रोधित हुए। उन्होंने यीशु को मार डालने की षडयंत्र रचना शुरू कर दी। फिर फरिश्ते के आदेश से जोसफ यीशु को परिवार सहित मिश्र देश में लाए। राजा हेरोड महान के मरने के बाद ही जोसफ और उनका परिवार फिर से एसरायल वापस आए और यीशु को नजारत नगर में रखा गया। यीशु ने वहाँ एक पर्वत पर बैठकर अपने लोगों को धार्मिक सिद्धान्त तथा धार्मिक कथा सुनाई। यीशु ने कहा – “ अपने शत्रु से भी प्रेम करो। ईश्वर पर श्रद्धा रखो। दूसरे लोग तुमको जिस तरह व्यवहार कराना चाहते हैं उसी तरह तुम भी दूसरों के प्रति व्यवहार करो। ”

लोग उनसे बहुत प्रभावित हुए। हर जगह उनके गुणों की प्रशंसा और चर्चा हुई। दिन व दिन उनकी शक्ति बढ़ती गई। हवा तथा सागर तक उनका कहना मानते थे। एक बार वे अपने शिष्यों के साथ गलेलीं सागर में जा रहे थे तब अचानक सागर में तूफान उठने लगा, लहरें उठने लगी; सब लोग घबराने लगे। लोगों की घबराहट को देखकर यीशु ने तूफान से शान्त होने को कहा। तूफान शान्त से गया। इस तरह उन्होंने कई स्थलों पर अपनी शक्ति प्रयोग कर कल्याण का मार्ग दिखाया।



यीशु का एक मित्र था जिसका नाम लजारस था। वह अपनी बहनें मेरी और मारथा के साथ बेथानी में रहता था। कुछ दिनों के बाद यीशु को पता चला कि उनके मित्र लजारस की मृत्यु हो गई। वे बेथानी में गए और उन्होंने अपने मरे हुए मित्र लजारस को चार दिनों के बाद पुनः जीवन देकर जीवित किया। उनके गुण और शक्ति का समाचार हर जगह फैल गया। लोग यीशु को “भगवान का पुत्र” कहकर पुकारने लगे। वह सब देखकर और सुनकर यहूदी नेताओं की छाती पर साँप लोट गए। इसलिए यहूदी के अग्रगण्य लोगों और नेताओं ने उनको मारना चाहा। उन्होंने यीशु को ईश-निन्दक कहकर पकड़वाया और मुकदमा चलाया। तत्कालीन रोमन गवर्नर पाइलेट ने यीशु को सूली पर चढ़ाकर मार डालने का हुक्म दिया। पाइलेट के आदेशानुसार यीशु को 36 वर्ष की आयु में सूली पर चढ़ा कर मार डाला।

कठिन शब्दों के अर्थ—

कोख	=	उदर, पेट, गर्भाशय
फरिश्ता	=	देवदूत
दैव	=	देवता संबंधी, देवता की ओर से होनेवाला
षडयंत्र	=	साजिश, कुचक्र
श्रद्धा	=	आदरपूर्ण आस्था या विश्वास
तूफान	=	बहुत तेज आँधी जिसमें वर्षा भी हो
अग्रगण्य	=	श्रेष्ठ, प्रमुख
मुकदमा	=	अदालत में पेश किया गया मामला, दावा, नालिश
तत्काली	=	उस समय का, उन दिनों का
सूली	=	प्राण दंड देने की एक विधि, लोहे का नुकीला छड़

प्रश्न-अभ्यास

1. यहूदी परिवार में जन्मे उस दैविक लड़के को ईसाई धर्म में क्या माना जाता है ?
उस लड़के के सम्बन्ध में मेथिउ और ल्यूक के विचार लिखिए।
2. मेरी ने किस अवस्था में अपनी कोख में बच्चा धारण किया ? जन्म होने पर उस लड़के का क्या नाम रखा गया ?
3. राजा हेरोड महान क्यों क्रोधित हुए ? उसने यीशु के विरुद्ध क्या किया ?
4. यीशु का उपदेश क्या है और उन्होंने लोगों को क्या-क्या चमत्कार दिखाया ?

5. यीशु को क्यों मारा गया ?
6. यीशु की जीवनी संक्षेप में लिखिए।
7. यीशु के जन्म से संबंधित असाधारण बात क्या है ? लिखिए।
8. प्रमुख धर्म-सम्प्रदाय हिन्दू, मुसलिम, सिख, ईसाई, बौध, और जैन के मुख्य संस्थापकों और धार्मिक ग्रंथों के नाम लिखिए।
9. अपने अध्यापक से पूछकर ईसाई के धार्मिक ग्रंथ के बारे में दस वाक्य लिखिए।
